वर्तमान में संचालित

वास्तु ज्योतिष डिप्लोमा पाठ्यक्रम

भाषा- संस्कृत/हिन्दी/अंग्रेजी

पाठ्यक्रम सारांश

क्रम	पत्र	प्रश्नपत्र	ग्रंथ/पाठ्यबिन्दु	विवरण	अङ्क	क्रेडिट
1	प्रथम	कुण्डली निर्माण	जन्मपत्र दीपक/ भारतीय कुण्डली विज्ञान	चयनित बिन्दुओं के साथ	60+40आन्तरिक =100	06
2	द्वितीय	पञ्चाङ्ग परिचय	श्रीभोजराज पञ्चाङ्गम्	चयनित बिन्दुओं के साथ	60+40आन्तरिक =100	06
3	तृतीय	वास्तुशास्त्र शिक्षण	वास्तुरत्नावली	1,2,3,4,5 चयनित बिन्दुओं के साथ	60+40आन्तरिक =100	06
4	चतुर्थ	मुहूर्त शिक्षण	मुहूर्तचिन्तामणि	1,2,3,4 चयनित बिन्दुओं के साथ	60+40आन्तरिक =100	06
5	पंचम	साम्प्रतिक वास्तुशास्त्र	साम्प्रतिक वास्तुविचार	चयनित बिन्दुओं के साथ	60+40आन्तरिक =100	06
परियोजना कार्य			ज्योतिषशास्त्र वास्तुशास्त्र	40 पृष्ठात्मक 40 पृष्ठात्मक	60+40आन्तरिक =100	10

पत्र संख्या- 05

कुल वार्षिक क्रेडिट -40 (प्रत्येक पत्र के 6 क्रेडिट **=6x6=36+10** परियोजना कार्य)

वास्तु ज्योतिष डिप्लोमा पाठ्यक्रम का विस्तृत विवरण

प्रथमपत्र

पूर्णाङ्क- 100 (60 लिखित एवं 40 आन्तरिक)

क्रेडिट-06

विषय- कुण्डलीनिर्माण ज्ञान

ग्रंथ- जन्मपत्रदीपक, मुक्तस्वाध्यायपीठद्वाराप्रकाशित

क्रम	शीर्षक	विवरण	क्रेडिट
1	कुण्डली गणित-1	स्थानीयसूर्योदय-सूर्यास्तसाधन, स्थानिक जन्मसमयज्ञान	1
2	कुण्डली गणित-2	इष्टकाल ग्रहस्पष्ट, भयातभभोग चंद्रस्पष्टसाधन (श्लोक 08), पलभा चरखण्डानयन, अंक्षाश के माध्यम सारिणीद्वारापलभानयन, लंकोदयमान से स्वोदयमान, अंयनांशज्ञान (श्लोक 13-14),	1
3	लग्नादि भाव साधन	लग्नसाधन (श्लोक 15-17), दशमलग्न, द्वादशभावसाधन	2
4	षड्वर्गचक्रादि ज्ञान	होरा द्रेष्काण नवांश, द्वादशांश त्रिंशांश का ज्ञान, नैसर्गिकमैत्री, तात्कालिकमैत्री, पंचधामैत्री, राशियों के नाम और स्वामी, विंशोत्तरीदशाप्रकार एवं दशाभुक्तभोग्यसाधन (श्लोक 53). अन्तर्दशाद्यानयन (श्लोक 60),	2

संदर्भग्रंथ- भारतीय कुण्डली विज्ञानम्- मीठालाल ओझा

भारतीय ज्योतिष- नेमिचन्द्र शास्त्री. भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन।

वास्तु ज्योतिष डिप्लोमा पाठ्यक्रम

द्वितीय पत्र

पूर्णाङ्क- 100 (60 लिखित एवं 40 आन्तरिक)

क्रेडिट-06

विषय-पञ्चाङ्गपरिचय

ग्रंथ- श्रीभोजराज पञ्चाङ्ग, प्रकाशन- केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय भोपाल परिसर भोपाल

क्रम	शीर्षक	विवरण	क्रेडिट
1	कालज्ञान	कल्पादि स्वरूप परिचय, युगादि मान, कलिगताब्द, विक्रमसंवत्, शकसंवत्, संवत्सर, अयन, गोल, ऋतु,मास, पक्षादि परिचय	1
2	पञ्चाङ्ग ज्ञान-1	तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण (चर-स्थिर) के नाम और परिचय, गण्डान्त, पंचक, भद्रा ज्ञान, दिनमान,	1
3	पञ्चाङ्ग ज्ञान-2	क्षय-वृद्धि तिथ्यादि स्वरूप ज्ञान, नक्षत्र चरण और राशि निर्माण, चन्द्रराशि प्रवेश, अग्निवास	1
4	लग्नादि परिचय	पञ्चाङ्ग से लग्न ज्ञान और जन्माङ्ग चक्र निर्माण सप्तशलाका, पंचशलाका वेध, पापग्रह युति, शिववास	1
5	ग्रहचारदि ज्ञान	ग्रहचार, शनिचार विशेष, संक्रान्ति विचार, वर्षेशादि विचार,	1
6	मेलापक	नक्षत्रों के वर्णादि अष्टकूट ज्ञान, मेलापक सारिणी ज्ञान, विवाहकाल में सूर्य,गुरु और चंद्र की शुद्धि	1

संदर्भग्रंथ- श्रीभोजराज पञ्चाङ्ग, प्रकाशन- केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय भोपाल परिसर भोपाल

वास्तु ज्योतिष डिप्लोमा पाठ्यक्रम

तृतीय प्रश्नपत्र

विषय-वास्तुशास्त्रशिक्षण

क्रेडिट-06

ग्रन्थ – वास्तुरत्नावली

पूर्णाङ्क- 100 (60 लिखित एवं 40 आन्तरिक)

क्रम	शीर्षक	विवरण	क्रेडिट
1	भूपरिग्रहाध्याय- प्रथम अध्याय गृहद्वारनिर्णयाध्याय-	मंगलाचरण, गृहनिर्माणप्रयोजन, ग्रामादि स्वस्यशुभाशुभत्व, काकिणी, गृहदशा, ग्रामवासनराकृति, शिवाबलिनिरूपण, लाभालाभविचार, द्वारनिवेशफल, राशियों के वर्णज्ञान, राशियों के निषिद्ध स्थान, वर्णानुसार भूलक्षण, वर्गज्ञान, भूमि का रस गंधादि विचार, भूमि का प्लवत्व, भूमिदोषविचार, गजपृष्ठादिभूलक्षण, मनश्शुद्धि द्वारा भूमि चयन।	2
2	शल्योद्धाराध्याय - द्वितीय अध्याय	सम्पूर्णाध्याय	1
3	दिग्ज्ञानाध्याय	सम्पूर्णाध्याय	1
4	गृहचतुर्दिक्षु-वृक्षरोपण निर्णयाध्याय	सम्पूर्णाध्याय	1
5	वास्तुपूजनविवेक	वास्तुपूजा दिग्विचार, वास्तुपुरुष की उत्पत्ति, वास्तुपूजन की आवश्यकता, वास्तुपूजन में पद व्यवस्था, कार्यानुसार वास्तुपुरुष का पूजन श्लो.5, वास्तुपुरुष के अङ्गदेवता श्लो.6,7	1

संदर्भग्रंथ- वृहद्वास्तुमाला, संकलित-श्रीरामनिहोर द्विवेदी, चौखम्बा प्रकाशन वाराणसी।

वास्तु ज्योतिष डिप्लोमा पाठ्यक्रम

चतुर्थ प्रश्नपत्र

पूर्णाङ्क- 100 (60 लिखित एवं 40 आन्तरिक)

क्रेडिट-06

विषय-मुहूर्तशिक्षण

ग्रंथ- मुहूर्तचिन्तामणि, लेखक- श्रीरामदैवज्ञ, टीका- केदारदत्तजोशी, मोतीलाल बनारसीदास।

60 +40 आन्तरिक= 100

क्रम	शीर्षक	विवरण	क्रेडिट
1	शुभाशुभप्रकरण प्रथम-प्रकरण	श्लोका1,3,4,5,18,19,20,21,22,27,28,29,32,34,35,40 ,45,46,47,48.49,57	2
2	नक्षत्रप्रकरण द्वितीय प्रकरण	श्लोक-1 से 9, 13,15,16,17,22 से 28; 34, 35,36, 40, 41, 44, 45,46,47, 50, 53,54,55,58 से 60	2
4	गोचरप्रकरण	सम्पूर्णाध्याय	2

संदर्भग्रंथ- मुहूर्तमार्तण्ड-लेखक- श्रीनारायण दैवज्ञ, टीका- केदारदत्तजोशी, मोतीलाल बनारसीदास।

वास्तु ज्योतिष डिप्लोमा पाठ्यक्रम

पंचमप्रश्नपत्र

विषय- साम्प्रतिकवास्तुशिक्षणम्

पूर्णाङ्क- 100 (60 लिखित एवं 40 आन्तरिक)

ग्रंथ- साम्प्रतिकवास्तुशास्त्र

60 +40 आन्तरिक= 100

ग्रंथ- साम्प्रतिकवास्तुविचार (संकलित ग्रंथ)

क्रम	शीर्षक	विवरण	क्रेडिट
1	भूपरिदृश्यनिर्माण-1	भूखण्ड चयन- भौगोलिक आधार, भूमि के आधार, प्लव के आधार पर, कोणों का आधार, भूखण्ड के कटाव का आधार। दिशाओं के आधार पर भूखण्ड का चयन- एक दिशा, दो दिशा, तीन दिशा और चारों दिशाओं के मार्ग वाले भूखण्ड का प्रभाव। मार्ग वेध-भूखण्ड के बाहर मार्गवेध, एक दिशा का वेध, दो दिशाओं का वेध, तीन दिशाओं में वेध, चारों दिशाओं का वेध	1
2	भूपरिदृश्यनिर्माण-2	भूमि का प्लव-उन्नतादि विचार- दिशाओं के आधार पर भूमि का ढलान और प्लवत्व का विचार। भूखण्ड के आस-पास का वातावरण विचार- पर्यावरण, जल, पर्वत आदि का विचार भूखण्ड के आस-पास के भवनादि विचार- चिकित्सालय, देवालय, सामुदायिक भवनादि विचार	1

3	निर्माण विन्यास	भवन निर्माण की शुभ आकृतियां- एकशाल, द्विशाल, त्रिशालादि विचार। भवन की शुभाशुभ आकृतियां-सुक्षेत्र त्रिशाल. हिरण्य त्रिशाल, दण्ड द्विशाल, यमसूर्यद्विशाल, वातद्विशाल, काञ्चन द्विशाल, गृहद्विशाल, चुल्ली त्रिशाल, पक्षघ्न त्रिशाल। विदिशा भूखण्डों पर वास्तुसम्मत निर्माण विन्यास- विदिशा भूखण्डों का वर्गीकरण, ईशानमुखी विदिशा के भूखण्ड, आग्नेयमुखी विदिशा के भूखण्ड, दक्षिणमुखी विदिशा के भूखण्ड, नैर्ऋत्यमुखी विदिशा के भूखण्ड, पश्चिममुखी विदिशा के भूखण्ड, वायव्यमुखी विदिशा के भूखण्ड, उत्तरमुखी विदिशा के भूखण्ड	1
4	वास्तुपद विन्यास	1-वास्तुपद विन्यास-वास्तुपद का महत्त्व, वास्तुपुरुष का स्वरूप, कार्यानुसार वास्तुप्रभेद, एकाशीतिपद वास्तु के देवता और वर्ण विचार, शतपद वास्तु देवता और वर्ण विचार, चतुष्षष्टिपद देवता और वर्ण विचार वास्तु, 2-शिलान्यास विचार। 3-स्तम्भ पद विन्यास स्तम्भों का सौन्दर्यीकरण, स्तम्भ परिमाण, स्तम्भदिशा, स्तम्भदोष, स्तम्भस्थल, स्तम्भारोपण मुहूर्त	2
5	भवनों का वर्गीकरण	बहुमंजिले भवनों का वर्गीकरण, आवासीय फ्लैट, राजभवन, औद्योगिकभवनादि का विचार	1

संदर्भग्रंथ-

भारतीय वास्तु शास्त्र – आचार्य शुकदेव जी
समराङ्गण सूत्रधार- चौखम्बाप्रकाशन
अपराजितपृच्छा- परिमलप्रकाशन दिल्ली।

.....